|  |
| --- |
|  |
| |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/sys/S.gif | |  |  | | --- | | https://files.constantcontact.com/6d6c5e0b501/7adca191-66bc-4fe3-a90d-c7aff535a833.jpg?rdr=true | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/sys/S.gif | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | [“](https://app.constantcontact.com/pages/campaigns/email-details/reporting/activity/67d23890-1c95-4bb9-9215-08b2cb9f9256)*While meeting with them, He enjoined them not to depart from Jerusalem, but to wait for “the promise of the Father—about which you have heard Me speak; for John baptized with water, but in a few days you will be baptized with the Holy Spirit*….” … *All these devoted themselves with one accord to prayer, together with some women, and Mary the mother of Jesus, and his brothers.*” (Acts of the Apostles 1:4-5, 14)    Good morning, beloved faithful! Since today is the fortieth day after Easter, it is Ascension Thursday, though in this diocese, the celebration of the Ascension of our Lord is transferred to this Sunday. Following the instruction of our Lord to the Apostles, we can and should also spend these days between the Ascension and Pentecost in prayer for the Gifts of the Holy Spirit. To that end, I warmly invite you to pray a Novena to the Holy Spirit, which is below as well as [here](https://files.constantcontact.com/6d6c5e0b501/23ef937e-a956-458f-a382-d0660a08bcac.pdf?rdr=true) (a PDF version) or [here](https://www.ewtn.com/catholicism/devotions/novena-to-the-holy-spirit-for-the-seven-gifts-13434) (on the EWTN website). While the text of the Novena differs, the idea remains the same: to pray for the coming of the Holy Spirit from the Ascension to the day before Pentecost.      The word “Novena” is derived from the Latin word for nine, novem, because a Novena generally lasts for nine days, weeks, or months, or some form of nine (e.g. nine consecutive Saturdays). A Novena is a private or public devotion to obtain special graces. The character of a Novena is generally that of hopeful mourning, of yearning, and of prayer. Four kinds of Novenas can be distinguished: Novenas of mourning, Novenas of preparation, Novenas of prayer, and indulgenced Novenas, though this distinction is not exclusive. The Novena of the Holy Spirit is a Novena of preparation, which are modeled on the very first Novena, the days the Apostles—following the expressed exhortation of the Lord Jesus Himself—“*devoted themselves with one accord to prayer, together with some women, and Mary the mother of Jesus*” in the Upper Room. And when the infant Church had faithfully persevered for nine full days in it, the Holy Spirit came as the precious fruit of this first Christian Novena for the establishment and foundation of the Church.      Dear faithful, throughout the history of Holy Church Novenas have brought so many answers to prayer—sometimes even miraculous answers to prayer. But Novenas should never be used superstitiously. All Novenas are ultimately prayer to Almighty God. Novenas quite frequently have many prayers in them, sometimes long prayers, and by praying them faithfully, we learn perseverance in all prayer.      And so, I invite everyone to pray this Novena beginning tomorrow, Friday, 27 May, until Saturday, 4 June. Come, Holy Spirit, fill the hearts of Your faithful and enkindle in them the fire of your love!  Fr Gripshover  **NOVENA TO**  **THE HOLY SPIRIT**  **This Novena is the oldest Novena, ﬁrst made at the direction of Our Lord when He sent His Apostles back to Jerusalem to await the coming of the Holy Spirit on the First Pentecost.**  **Addressed to the Third Person of the Blessed Trinity, it is a powerful plea for the light, strength, and love so sorely needed by every Christian.**    Imprimatur: Patrick A. O’Boyle, D.D.—Archbishop of Washington, Washington, D.C.—March 12, 1948 | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **Specific Novena Prayers for each Day**  Begin the Novena each day with the Sign of the Cross, then pray the corresponding prayer for the day below, then pray the Daily Prayers at the end. | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **FIRST DAY (Friday): THE HOLY SPIRIT**  Holy Spirit! Lord of light! From Thy clear celestial height, Thy pure beaming radiance give!   Only one thing is important—eternal salvation. Only one thing, therefore, is to be feared—sin. Sin is the result of ignorance, weakness, and indifference. The Holy Spirit is the Spirit of Light, of Strength, and of Love. With His sevenfold gifts, He enlightens the mind, strengthens the will, and inflames the heart with love of God. To ensure our salvation, we ought to invoke the Divine Spirit daily, for “*The Spirit helpeth our infirmity. We know not what we should pray for as we ought. But the Spirit Himself asketh for us*.”    Almighty and eternal God, Who has vouchsafed to regenerate us by water and the Holy Spirit, and hast given us forgiveness of all our sins, vouchsafe to send forth from Heaven upon us Thy sevenfold Spirit, the Spirit of Wisdom and Understanding, the Spirit of Counsel and Fortitude, the Spirit of Knowledge and Piety, and fill us with the Spirit of Holy Fear. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **SECOND DAY (Saturday): THE GIFT OF FEAR OF THE LORD**  Come, Thou Father of the poor! Come, with treasures which endure! Come, Thou light of all that live!    The gift of Fear fills us with a sovereign respect for God and makes us dread nothing so much as to offend Him by sin. It is a fear that arises, not from the thought of hell, but from sentiments of reverence and filial submission to our Heavenly Father. It is the fear that is the beginning of wisdom, detaching us from worldly pleasures that could in any way separate us from God. “*They that fear the Lord will prepare their hearts, and in His sight will sanctify their souls*.”    Come, O blessed Spirit of Holy Fear, penetrate my inmost heart, that I may set Thee, my Lord and God, before my face forever; help me to shun all things that can offend Thee, and make me worthy to appear before the pure eyes of Thy Divine Majesty in Heaven, where Thou livest and reignest in the unity of the ever Blessed Trinity, God world without end. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **THIRD DAY (Sunday): THE GIFT OF PIETY**  Thou, of all consolers best, visiting the troubled breast, dost refreshing peace bestow.    The gift of Piety begets in our hearts a filial affection for God as our most loving Father. It inspires us to love and respect for His sake persons and things consecrated to Him, as well as those who are vested with His authority, His Blessed Mother and the Saints, the Church and its visible Head, our parents and superiors, our country and its rulers. He who is filled with the gift of Piety finds the practice of his religion, not a burdensome duty, but a delightful service. Where there is love, there is no labor.    Come, O Blessed Spirit of Piety, possess my heart. Enkindle therein such a love for God, that I may find satisfaction only in His service, and for His sake lovingly submit to all legitimate authority. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **FOURTH DAY (Monday): THE GIFT OF FORTITUDE**  Thou in toil art comfort sweet, pleasant coolness in the heat; solace in the midst of woe.    By the gift of Fortitude, the soul is strengthened against natural fear, and supported to the end in the performance of duty. Fortitude imparts to the will an impulse and energy which move it to undertake without hesitancy the most arduous tasks, to face dangers, to trample under foot human respect, and to endure without complaint the slow martyrdom of even lifelong tribulation. “*He that shall persevere unto the end, he shall be saved*.”    Come, O Blessed Spirit of Fortitude, uphold my soul in times of trouble and adversity, sustain my efforts after holiness, strengthen my weakness, give me courage against all the assaults of my enemies, that I may never be overcome and separated from Thee, my God and greatest Good. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **FIFTH DAY (Tuesday): THE GIFT OF KNOWLEDGE**  Light immortal! Light Divine! Visit Thou these hearts of Thine, and our inmost being fill.    The gift of Knowledge enables the soul to evaluate created things at their true worth—in relation to God. Knowledge unmasks the pretense of creatures, reveals their emptiness, and points out their only true purpose as instruments in the service of God. It shows us the loving care of God even in adversity and directs us to glorify Him in every circumstance of life. Guided by its light, we put first things first, and prize the friendship of God beyond all else. “*Knowledge is a fountain of life to him that possesseth it*.”    Come, O Blessed Spirit of Knowledge, and grant that I may perceive the will of the Father; show me the nothingness of earthly things, that I may realize their vanity and use them only for Thy glory and my own salvation, looking ever beyond them to Thee, and Thy eternal rewards. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **SIXTH DAY (Wednesday): THE GIFT OF UNDERSTANDING**  If Thou take Thy grace away, nothing pure in man will stay, all his good is turn’d to ill.    Understanding, as a gift of the Holy Spirit, helps us to grasp the meaning of the truths of our holy religion. By faith we know them, but by Understanding we learn to appreciate and relish them. It enables us to penetrate the inner meaning of revealed truths and through them to be quickened to newness of life. Our faith ceases to be sterile and inactive but inspires a mode of life that bears eloquent testimony to the faith that is in us; we begin to “*walk worthy of God in all things pleasing, and increasing in the knowledge of God*.”    Come, O Spirit of Understanding, and enlighten our minds, that we may know and believe all the mysteries of salvation; and may merit at last to see the eternal light; and in the light of glory to have a clear vision of Thee and of the Father and of the Son. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **SEVENTH DAY (Thursday): THE GIFT OF COUNSEL**  Heal our wounds—our strength renew; on our dryness pour Thy dew; wash the stains of guilt away!    The gift of Counsel endows the soul with supernatural prudence, enabling it to judge promptly and rightly what must be done, especially in difficult circumstances. Counsel applies the principles furnished by Knowledge and Understanding to the innumerable concrete cases that confront us in the course of our daily duty as parents, teachers, public servants and Christian citizens. Counsel is supernatural common sense, a priceless treasure in the quest of salvation. “*Above all these things, pray to the Most High, that He may direct thy way in truth*.”    Come, O Spirit of Counsel, help and guide me in all my ways, that I may always do Thy holy will. Incline my heart to that which is good; turn it away from all that is evil and direct me by the straight path of Thy Commandments to that goal of eternal life for which I long. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **EIGHTH DAY (Friday): THE GIFT OF WISDOM**  Bend the stubborn heart and will; melt the frozen, warm the chill; guide the steps that go astray!    Embodying all the other gifts, as charity embraces all other virtues, Wisdom is the most perfect of the gifts. Of wisdom it is written “*all good things came to me with her, and innumerable riches through her hands*.” It is the gift of Wisdom that strengthens our faith, fortifies hope, perfects charity, and promotes the practice of virtue in the highest degree. Wisdom enlightens the mind to discern and relish things Divine, in the appreciation of which earthly joys lose their savor, whilst the Cross of Christ yields a Divine sweetness according to the words of the Savior: “*Take up thy cross and follow Me, for My yoke is sweet, and My burden light*.”    Come, O Spirit of Wisdom, and reveal to my soul the mysteries of heavenly things, their exceeding greatness, power and beauty. Teach me to love them above and beyond all passing joys and satisfactions of the earth. Help me to attain them and possess them forever. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **NINTH DAY (Saturday): THE FRUITS OF THE HOLY SPIRIT**  Thou, on those who evermore Thee confess and Thee adore, in Thy sevenfold gifts, descend: give them comfort when they die; give them life with Thee on high give them joy which never ends. Amen.    The gifts of the Holy Spirit perfect the supernatural virtues by enabling us to practice them with greater docility to Divine inspiration. As we grow in the knowledge and love of God under the direction of the Holy Spirit, our service becomes more sincere and generous, the practice of virtue more perfect. Such acts of virtue leave the heart filled with joy and consolation and are known as Fruits of the Holy Spirit. These fruits in turn render the practice of virtue more attractive and become a powerful incentive for still greater efforts in the service of God, to serve Whom is to reign.    Come, O Divine Spirit, fill my heart with Thy heavenly fruits, Thy charity, joy, peace, patience, benignity, goodness, faith, mildness, and temperance, that I may never weary in the service of God, but by continued faithful submission to Thy inspiration, may merit to be united eternally with Thee in the love of the Father and the Son. Amen.  RECITE THE DAILY PRAYERS BELOW | |  |  |  |  |  | | --- | --- | --- | --- | | |  |  |  | | --- | --- | --- | | |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | https://imgssl.constantcontact.com/letters/images/1101116784221/S.gif | | | |  |  |  | | --- | --- | | |  | | --- | | **Daily Prayers Prayed each Day of the Novena**  **PRAYER TO THE HOLY SPIRIT (*prayed once each day*)**  Come Holy Spirit, fill the hearts of Your faithful and enkindle in them the fire of Your love. Send forth Your Spirit and they shall be created. And You shall renew the face of the earth.  **OUR FATHER (*prayed once each day*)**    **HAIL MARY (*prayed once each day*)**    **GLORY BE (*prayed 7 times each day*)**    **PRAYER FOR THE SEVEN GIFTS OF THE HOLY SPIRIT (*prayed once each day*)**  O Lord Jesus Christ, Who before Ascending into Heaven, did promise to send the Holy Spirit to finish Your work in the souls of Your Apostles and Disciples, deign to grant the same Holy Spirit to me that He may perfect in my soul the work of Your grace and Your love. Grant me the Spirit of Wisdom that I may despise the perishable things of this world and aspire only after the things that are eternal, the Spirit of Understanding to enlighten my mind with the light of Your Divine Truth, the Spirit of Counsel that I may ever choose the surest way of pleasing God and gaining Heaven, the Spirit of Fortitude that I may bear my cross with You and that I may overcome with courage all the obstacles that oppose my salvation, the Spirit of Knowledge that I may know God and know myself and grow perfect in the science of the Saints, the Spirit of Piety that I may find the service of God sweet and amiable, the Spirit of Fear that I may be filled with a loving reverence towards God and may dread in any way to displease Him. Mark me, dear Lord, with the sign of Your true disciples and animate me in all things with Your Spirit. Amen.    **ACT OF CONSECRATION TO THE HOLY SPIRIT (*prayed once each day*)**  On my knees before the great multitude of heavenly witnesses, I offer myself, soul and body to You, Eternal Spirit of God. I adore the brightness of Your purity, the unerring keenness of Your justice, and the might of Your love. You are the strength and Light of my soul. In You I live and move and am. I desire never to grieve You by unfaithfulness to grace and I pray with all my heart to be kept from the smallest sin against You. Mercifully guard my every thought and grant that I may always watch for Your Light and listen to Your Voice and follow Your gracious inspirations. I cling to You and give myself to You and ask You by Your compassion to watch over me in my weakness. Holding the pierced Feet of Jesus and looking at His Five Wounds and trusting in His Precious Blood and adoring His opened Side and stricken Heart, I implore You Adorable Spirit, Helper of my infirmity, so to keep me in Your grace that I may never sin against You. Give me grace, O Holy Spirit, Spirit of the Father and the Son, to say to You always and everywhere, “Speak Lord, for Your servant is listening.” Amen | | | | | | |